



International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519

IJSR 2024; 10(4): 68-73

© 2024 IJSR

www.anantaajournal.com

Received: 02-04-2024

Accepted: 03-05-2024

मंगल सिंह

शोधार्थी संस्कृत-विभाग, चौधरी
देवीलाल विश्वविद्यालय,
सिरसा, हरियाणा, भारत

डॉ राकेश कुमार

सहायकाचार्य संस्कृत-विभाग,
चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय,
सिरसा, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:

मंगल सिंह

शोधार्थी संस्कृत-विभाग, चौधरी
देवीलाल विश्वविद्यालय,
सिरसा, हरियाणा, भारत

श्रीमद्भागवतगीता में सांख्य दर्शन के अनुमत त्रयगुणः एक अध्ययन

मंगल सिंह, डॉ राकेश कुमार

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति आदिकाल से अपना स्थान रखती है। इसका महानतम् विषय इसकी प्राचीनता से परिभाषित है कहा भी गया है कि संस्कृति से ओत प्रोत संस्कृत वाङ्मय भी सामाजिक दर्पण की भूमिका निर्वहन करता आया है। संस्कृत वाङ्मय में संपूर्ण विश्व की आधारशिला का निर्धारण करते हुए वेद, पुराण, उपनिषद, महाकाव्य एवं स्मृति ग्रन्थों को समावेशित किए हुए हैं। विश्व की समस्त प्राचीन भाषाओं में संस्कृत वाङ्मय सर्वोपरि है। विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद संस्कृत भाषा में ही संकलित है। भारतीय संस्कृति, संस्कार और तीनों गुणों सत्व, रजस्, तमस् का समायोजन संस्कृत वाङ्मय की अमूल्य निधि के रूप में मिलता है। गद्य- पद्य, चम्पूकाव्यों में ऐतिहासिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विषयों का क्रमागत अध्ययन प्राप्त होना स्वाभाविक है। ऋग्वेद के आख्यानों में से महाकाव्य के लेखन विषय पर दृष्टिपात करना संभव हुआ है। जिसमें शतसाहस्री नामक महाकाव्य अर्थात् महाभारत जिसमें 18 पर्वों का वर्णन किया गया है। महाभारत के भीष्म पर्व जिसमें छठ वें पर्व के रूप में श्रीमद्भगवत गीता लिखी गई है। श्रीमद्भगवत गीता में आत्म तत्व ज्ञान और मनुष्य के तीनों गुणों का विस्तार पूर्वक वर्णन मिलता है। श्रीमद्भगवत गीता के प्रस्तोत श्री कृष्ण जी द्वारा प्रदत्त ज्ञान की अनुपालना करना शाश्वत सत्य है। इसका उद्देश्य सुख-दुःख को समान समझकर लाभ हानि को समरूप मानकर सतत् प्रयास करते रहना चाहिए। इस उपदेश को पूर्ण रूप से सुनकर अर्जुन श्री कृष्ण जी को परम ब्रह्म के रूप में स्वीकार कर लेता है। आधुनिक समय में मनुष्य को श्रीमद्भगवत गीता के उपदेश को अपनी दिनचर्या में समावेश कर लेना चाहिए। श्रीमद्भगवतगीता में प्रकृति के तीनों गुण सत्व, रजस्, तमस् का वर्णन मिलता है। इसमें तीन प्रकार के तत्व सत्व, रजस्, तमस् आहार का भी वर्णन मिलता है। श्री कृष्ण जी ने श्रीमद्भगवत गीता में कहा है कि पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु नश्वर है।

संसार में सभी परिवर्तनशील हैं। प्रकृति के नियम अनुसार सभी वस्तुएं स्वयं धीरे-धीरे नष्ट हो जाती हैं, इसलिए श्रीमद्भगवत गीता को उपकारी ग्रंथ मानकर अपने जीवन में अपना लेना चाहिए।

सांख्य दर्शन में त्रय गुण

त्रिगुण विवेकी विषयः सामान्यचेतनं प्रसवधर्मि।

व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ॥¹

व्यक्त और प्रधान यह दोनों सत्व, रजस्, तमस् तीनों गुणों से परिपूर्ण हैं। प्रकृति को प्रसवधर्मि कहा गया है। पुरुष चेतन होते हुए भी निष्क्रिय है। प्रकृति अर्थात् अविकृति को जड़ के समान माना गया है। प्रकृति और पुरुष का सम्बंध अंधे और लंगड़े के समान है। इनमें प्रकृति अन्धी और पुरुष लंगड़ा है। यह दोनों निर्देशन से एक दूसरे का रास्ता तय करते हैं पुरुष व्यक्त और अव्यक्त से विपरीत दिशा में कार्य करता है। पुरुष को पुमाँ की संज्ञा दी गई है।

इस प्रकार आधुनिक समाज भी विकृति से संलिप्त हो रहा है। मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहा है। मनुष्य का निजी स्वार्थ ही उसकी भयानक बीमारी मौत का कारण बन गया है। प्राचीन समय में गर्मी सर्दी वर्षा समय अनुसार होती थी। आज के समय में मनुष्य की मूढ़ बुद्धि के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है। इसी कारण कुछ समय पहले उत्तराखंड में बहुत ही भयानक त्रासदी हुई थी। जगह-जगह पर वर्षा के कारण भूस्खलन, भूकम्प आदि के कारण प्रकृति अपना प्रचंड रूप प्रदर्शित कर रही है। 26 दिसंबर 2004 में सुनामी लहर प्रकृति के प्रकोप का ही उदाहरण है। प्रकृति और पुरुष एक दूसरे के निर्देशन से चलते हैं। इन दोनों का आपस में गहरा संबंध है। मनुष्य प्रकृति को नुकसान पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहा है। यदि यही क्रम चलता रहा तो प्रकृति की विपरीत दिशा पूरे विश्व का सर्वनाश कर देगी। इसीलिए मनुष्य को अपना निजी हित छोड़कर प्रकृति के संरक्षण की ओर

ध्यान देना चाहिए। ताकि आने वाली नवयुग पीढ़ी को बचाया जा सके।

प्रित्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाशप्रवृत्ति नियर्माथाः ।

अन्योऽन्याभिभवाश्रयजनन मिथुनवृत्तयश्च गुणाः

॥²

सत्व, रजस्, तमस् इन तीनों गुणों का स्वभाव व इनकी प्रवृत्ति भिन्न-भिन्न होती है। सत्व गुण को सुख देने वाला कहा गया है। रजस् गुण चञ्चल क्रियाशील प्रवृत्ति वाला होता है। तमस् गुण अंधकार की ओर समाविष्ट करने वाला अर्थात् मूढ़ बुद्धि को जागृत करता है। इन तीनों गुणों की प्रवृत्ति एक दूसरे को दबाने वाली होती है। यह तीनों गुण आपस में सहायक बनकर जनन और मिथुन प्रवृत्ति वाले बन जाते हैं। गुणों के साथ-साथ मन का भी संयोजन रहता है।

लक्ष्य की ओर योगियों का अनेक विषयों पर मन भूमियां

"क्षिप्तं मूढं विक्षिप्तमेकाग्रं निरुद्धमति चित्तभूमियः"³

क्षिप्त अवस्था: इस अवस्था में मनुष्य का रजस् गुण प्रधान होता है। अतः उसमें राग, द्वेष, मोह सांसारिक कर्मों की प्रवृत्ति चञ्चल मन की प्रवृत्ति अधिक उग्र हो जाती है।

मूढ़ अवस्था: यह अवस्था क्रोध, लोभ, मोह, माया के कारण आती है। मनुष्य इस अवस्था में अज्ञान होने के कारण अपनी ज्ञानेन्द्रियों को नियंत्रित नहीं कर पाता। इस अवस्था में निद्रा, आलस्य भय की प्रवृत्ति मनुष्य में पाई जाती है।

विक्षिप्त अवस्था: ज्ञान, वैराग्य, धर्म, ऐश्वर्य की अधिकता के कारण मनुष्य में सत्व गुण की प्रधानता आ जाती है। इस अवस्था में मनुष्य के मन में सात्विक विचार आते हैं।

² सांख्यकारिका- आ. निगम शर्मा. श्लो. सं. 12, पृ.सं. 106

³ योग दर्शन, (व्यासभाष्य), पृ.सं. 1.1

¹ सांख्यकारिका- आ. निगम शर्मा. श्लो. सं. 11, पृ.सं. 102

एकाग्र अवस्था: इस अवस्था में मनुष्य की सात्विक गुण की प्रधानता होती है। इसमें रजस् और तमस् गुण अंश मात्र ही होते हैं। इसमें मनुष्य अपनी सभी ज्ञानेन्द्रियों पर नियंत्रण करके अपना ध्यान केंद्रित कर लेता है। इसे संप्रज्ञात अर्थात् सबीज समाधि कहा जाता है।

निरुद्ध अवस्था:

इस चित भूमि में सात्विक वृत्तियों का निरोध हो जाता है। संस्कार मात्र शेष रह जाता है। निरोध अवस्था में कोई भी वृद्धि न रहने के कारण पदार्थ को जानने में समस्या आती है। इस अवस्था को असम्प्रज्ञात अर्थात् निर्बीज समाधि कहा जाता है।

आधुनिक युग में टेक्नोलॉजी का प्रचलन बहुत बढ़ गया है। कोरोना महामारी के दौरान विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय सभी बंद कर दिए गए। बच्चों में प्रत्यक्ष रूप से गुरु और शिष्य का सम्बंध शिथिल हो गया। बच्चों की शिक्षा को सुचारु रूप से चलाने के लिए मोबाईल को माध्यम बनाया गया। मोबाईल से बच्चों का ध्यान अन्य प्रतिक्रियाओं में लग गया। बच्चे दिन प्रतिदिन पढ़ाई से विमुख होते गए। बच्चे सोशल मीडिया का दुरुपयोग करने में संलिप्त हो गए। मोबाईल के अधिकतर प्रयोग से बच्चों की आंखों और मानसिक स्तर पर गहरा प्रभाव पड़ा। बच्चों का स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। बच्चे छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित होने लग गए। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मोबाईल की दुनिया बच्चों के लिए हानिकारक सिद्ध होती जा रही है अर्थात् वर्तमान समय में फिल्म, नाटक जिसमें मारपीट, कत्ल, चोरी, शराब आदि की घटनाओं को प्रदर्शित किया जाता है। जिससे रजस् गुण नाटक और फिल्मों को देखकर ऐसी ही प्रतिक्रिया बच्चे स्वयं घर में करते हैं। इस प्रकार मोबाईल, टेलीविजन बच्चों के ज्ञान में बाधक बन गए हैं। जिससे रजस् गुण की अधिकता के कारण स्वभाव पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

युक्तहार विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।

युक्तस्वपनावबोधस्य योगी भवति दुःखहा ॥⁴

योग तो दुखों को समाप्त करता है। आहार विहार करने वालों का कर्मों में चेष्टा करने वालों का समय पर सोने और समय पर जागृत अवस्था में रहने वालों का मनोरथ सिद्ध होता है अर्थात् वर्तमान समय में तमस् गुण की प्रधानता बढ़ती जा रही है। आज के समय में मनुष्य ने खाद्य सामग्री में बदलाव कर दिया है। प्राचीन समय में खाद्य पदार्थ में तरल पदार्थ बहुत ही सात्विक होते थे। वर्तमान समय में मानव ने पश्चिमी खाद्य पदार्थ, फास्ट फूड, चटपटे भोजन का प्रयोग करने लग गया। जिस कारण मनुष्य की सात्विक प्रवृत्ति बदलकर तमस् प्रवृत्ति का प्रभाव हो गया। इस कारण समाज में कत्ल, बलात्कार, चोरी नशा बढ़ गया है। प्राचीन काल में भोजन सात्विक होता था। सात्विक भोजन के कारण बुद्धि में सात्विक विचार ही आते थे, परंतु आज फास्ट फूड के कारण मनुष्य में तमस् गुण का प्रभाव बढ़ गया। इन तीनों गुणों को परिभाषित करने के लिए उनके रंग भी निर्धारित किए गए हैं जैसे:-

सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः ।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः ॥⁵

इन तीनों प्रवृत्तियों का वर्णन करते हुए ग्रंथकार कहते हैं कि लघुता के कारण प्रकाशक सत्त्व ही है। क्रियाशील होने से रजस् गुण चञ्चल है। रजस् गुण इंद्रियों को अपने वश में करके क्रियाशील रहता है। तमस् गुण मूढ़ बुद्धि बनाने वाला होता है। वृत्ति और तेल अग्नि द्वारा जल जाते हैं। अग्नि से मिलकर प्रकाश में कार्य करते हैं। इस प्रकार यजुर्वेद के बृहदारण्यकोपनिषद् में श्लोक द्वारा संदेश दिया गया है।

असतो मा सद्गमय ॥ तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥
मृत्योर्मा मृतम् गमय ॥⁶

⁴ श्रीमद्गवतगीता, अ. 6, श्लो. सं. 17, पृ.सं. 145

⁵ सांख्यकारिका- आ. निगम शर्मा. श्लो. सं. 13, पृ.सं. 110

⁶ बृहदारण्यकोपनिषद् 1.3.28

मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

जिस प्रकार बत्ती और तेल जलकर अग्नि द्वारा प्रकाश करते हैं। इसी तरह सूर्य भी स्वयं जलकर पृथ्वी पर प्रकाश करता है। शिक्षक भी अपने शिष्य को अंधकार अर्थात् अज्ञान से निकाल कर ज्ञान का प्रकाश कर देता है।

श्रीमद्भगवत गीता में त्रय गुण

श्रीमद्भगवत गीता में श्री कृष्ण जी तीनों गुणों सत्व, रजस्, तमस् के स्वभाव के बारे में बताते हैं कि-

सत्व गुण

तत्र सत्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसडेगन बध्नाति ज्ञानसडेगन चानघ ॥⁷

श्री कृष्ण जी कहते हैं कि तीनों गुणों में सत्व गुण निर्मल होने के कारण ज्ञान का प्रकाशक है। इसके कारण शरीर को सुख की अनुभूति होती है। सत्व गुण के ज्ञान के प्रभाव से मनुष्य का शरीर बंध जाता है। सत्व गुण पवित्र शुद्ध होने के कारण श्रेष्ठ माना गया है। यह मन में अनावश्यक पैदा होने वाले विकारों को शांत कर देता है।

सर्व द्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते ।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्वामित्युत ॥⁸

श्री कृष्ण जी अर्जुन को समझाते हैं कि सत्व गुण के सुख का अनुभव तभी किया जा सकता है। जब मनुष्य के नश्वर शरीर के सभी द्वारा ज्ञान के प्रकाश से उदीप्त हो जाए। मनुष्य के पूर्ण शरीर में नौ द्वार हैं। मनुष्य के अंतःकरण इंद्रियों में बाह्यकरण कर्मेन्द्रिया और ज्ञानेन्द्रियां शुद्ध हो जाती है। जिस मनुष्य में सत्व गुण

की प्रधानता ज्यादा होती है। उस व्यक्ति का स्वभाव शांत होता है।

वर्तमान समय में व्यक्ति अनेक विचारों से ग्रस्त है। जिससे बाजार में दिखने वाली अनेक वस्तुएं जो निर्माणी कंपनियां आकर्षक अवसर देकर लोगों का समान बेचने के प्रति आकर्षण बढ़ाती है। जिस व्यक्ति का मन पर नियंत्रण कम होता है। वह एक समय में मानसिक विकृति से बहुविध होकर विचार विमर्श करता है।

रजस् गुण

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्धभवम् ।
तन्निबन्धनाति कौंतेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥⁹

श्री कृष्ण जी कहते हैं कि अर्जुन रजस् गुण चंचल, रागात्मक, क्रियाशील होता है। यह क्रियाशील रजस् गुण अपनी शक्ति द्वारा जीव को अपनी ओर प्रभावित करता है। यह अपने अनुसार चंचलता, अतृप्ति आशा पैदा करता है। इस कारण मनुष्य का स्वभाव चंचल हो जाता है।

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशयः स्पृहा ।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥¹⁰

भारत के वंशजों में श्रेष्ठ जब रजस् गुण की प्रवृत्ति बढ़ती है तो मन में लालसा अत्यंत लगाव सकाम कर्म अत्यधिक परिश्रम जैसे भाव प्रकट होने लगते हैं। रजस् गुण से एक वस्तु की संतुष्टि न होकर अनेक प्रकार की वस्तुओं को प्राप्त करने की लालसा रहती है। इंद्रियां बलवान होती है। मनुष्य इंद्रियों को अपने नियंत्रण में नहीं कर पाता।

आधुनिक समय में मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन आ गया है। मानसिक इच्छा बढ़ने के कारण समाज भी बदल गया है। मनुष्य के चंचल स्वभाव के कारण उसका मन और इंद्रिय का सही संबंध नहीं बन रहा है। मनुष्य

⁷ श्रीमद्भगवतगीता, अ. 14, श्लो. सं. 06, पृ.सं. 309

⁸ वही, अ. 14, श्लो. सं. 11, पृ.सं. 312

⁹ वही, अ. 14, श्लो. सं. 07, पृ.सं. 310

¹⁰ वही, अ. 14, श्लो. सं. 12, पृ.सं. 312

इस बात से भली भांति परिचित है। कि शरीर नश्वर है। विचारों और समस्याओं से घिरे होने के कारण अपने विचारों पर सही निर्णय नहीं ले पाता। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपनी संस्कृति से विमुख हो गया है। धन का संचय करना मूल उद्देश्य बना लिया है। मनुष्य ने धन कमाने के लिए अपनी मनोवृत्ति को अपराधी बना लिया है। रजस् गुण की प्रधानता के कारण मानव स्वभाव में छल, कपट प्रबल हो गया है। मनुष्य को अपनी अनावश्यक इच्छाओं को शांत करने के लिए सात्विक प्रवृत्ति ग्रहण करनी चाहिए।

तमस गुण

तमस्त्वज्ञानं विद्धि मोहन सर्वदेहिनाम् ।

प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥¹¹

श्री कृष्ण जी कहते हैं कि अज्ञान के कारण तमस् गुण की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। तमस् गुण प्रमाद, आलस्य और अत्यधिक निद्रा से मनुष्य को अपने अनुरूप बना लेता है इस गुण को निकृष्ट प्रवृत्ति का माना गया है। यह हमेशा सत्व गुण के विपरीत कार्य करता है। तमस् गुण की प्रधानता के कारण मनुष्य में नशीले पदार्थों का सेवन करने प्रवृत्ति बढ़ जाती है।

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एवं च ।

तमस्येतानि जायन्ते विवृद्वे कुरुन्नदन ॥¹²

हे कुरु पुत्र! जब मनुष्य के अंतःकरण में तमस् गुण के भाव बढ़ जाते हैं तो आलस्य, प्रमाद, मोह आदि अवगुणों से मनुष्य संलिप्त हो जाता है। वह अपनी सात्विक विचारों की प्रवृत्ति को क्षीण कर लेता है। इस प्रकार धीरे-धीरे मनुष्य का शरीर निष्क्रिय हो जाता है। वह अपना ध्यान बुरी संगत की तरफ मोड़ लेता है। इस तरह उसकी बुद्धि धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है।

¹¹ श्रीमद्भगवद्गीता, अ. 14, श्लो. सं. 08, पृ. सं. 310

¹² वही, अ. 14, श्लो. सं. 13, पृ. सं. 313

वर्तमान समय में तमस् गुण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। तमस् गुण को निकृष्ट माना गया है। यह गुण मनुष्य को अध्यात्म से विमुख करके उसमें अज्ञानता, आलस्य पैदा करता है। वह समाज में स्वार्थीपन के कारण अकेला होता जा रहा है। जिससे उसके संबंधों में तनाव आ गया है। वर्तमान समय में मनुष्य ने मदिरा, जुआ खेलने, भोग- विलास आदि विषयों को अपने जीवन का आधार बना लिया है। मानव ने अपने जीवन की इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए धन को उद्देश्य बना लिया है। इस कारण समाज में लूटपाट चोरी हिंसा बढ़ गई है।

गुणों पर वर्तमान चिंतन

वैदिक वाङ्मय संस्कृत की अनुपम कृति है। मानव जीवन का आधार यह साहित्य रहा है। साहित्य से ही हमें समाज के हर पहलू की जानकारी मिलती है। दर्शन साहित्य का प्राचीन काल से ही हमारे जीवन पर अत्यधिक प्रभाव रहा है। मनुष्य का शरीर पांच तत्वों से मिलकर बना है। मनुष्य के शरीर में स्वभाविक से ही सत्व, रजस्, तमस् समस्त तीनों गुण विराजमान हैं। प्राचीन काल में मनुष्य अपना सरल जीवन व्यतीत करता था। वह समाज में प्यार भाईचारा से खुशी का जीवन निर्वाह करता था। वर्तमान समय में मनुष्य की जीवन शैली में पूर्णतया परिवर्तन आ गया है। मनुष्य स्वभाव से पशु प्रवृत्ति वाला हो गया है। आज के समयानुसार मनुष्य में तमस् गुण की प्रवृत्ति बढ़ गई है। आधुनिक समय में मनुष्य ने आध्यात्मिक जीवन को छोड़कर टेक्नोलॉजी अर्थात् मल्टीमीडिया वाला जीवन अपना लिया है। इस कारण मनुष्य का मानसिक स्तर कमजोर हो गया है। दिन- प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति बच्चों को मोबाईल फोन की इतनी लत लग गई है कि उनके दिमाग में अशांति, क्रोध मानसिक परेशानी आदि प्रवृत्तियाँ बढ़ गई हैं।

इस कारण घरों में आमतौर झगड़ा, आत्महत्या जैसे मुद्दे देखने को मिल रहे हैं। वर्तमान समय में मनुष्य ने अपनी जिह्वा की लालसा के लिए मसालेदार, चटपटे भोजन का प्रयोग करने लग गया। इससे मनुष्य के शरीर में तमस् गुण की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है। जिस

कारण मनुष्य की बुद्धि का स्तर कमजोर हो गया। मनुष्य द्वारा निर्मित चीज ही उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो गई है। मनुष्य धन की लालसा के कारण खाद्य पदार्थों में विषैली दवाइयों का प्रयोग कर रहा है। यह सब खाद्य पदार्थ का सेवन करने से मनुष्य का स्वभाव उग्र प्रवृत्ति वाला बन गया है जिस कारण समाज में बलात्कार एवं हिस्सा जैसी दिनचर्या बन गई है। इससे हमारे समाज और संस्कृति पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। मनुष्य जीवन शैली में तमस् गुण की प्रधानता बहुत बढ़ गई है। इस जीवन प्रक्रिया को बदलने का सार प्रकृति के तीनों गुण हैं। जिसका महत्व शास्त्रों में वर्णित है।

हमारे समाज को एक सही दिशा प्रदान करने के लिए श्रीमद्भागवत गीता का अध्ययन करना चाहिए। श्रीमद्भागवत गीता से समाज में मनुष्य को सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। मानव स्वभाव में परिवर्तन के लिए जीवन में अध्यात्म परम आवश्यक है।

उपसंहार

वर्तमान समय में हमारी समस्याएं बढ़ने का कारण हमारी अज्ञानता है। जीवन को सरल तरीके से जीने के लिए हमें प्रकृति के तीनों गुणों में से सात्विक गुण पद्धति को ग्रहण करना चाहिए। जीवन की इस भाग दौड़ में मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि वह वैदिक दर्शन को भूल गया है।

श्रीमद्भागवत गीता में मनुष्य के जीवन का सार है। जीवन में आज अध्यात्म की आवश्यकता है। इसके बिना मानव जीवन अधूरा सा है। श्रीमद्भागवत गीता का ज्ञान हमारे जीवन को उच्च एवं पवित्र बनाता है। संसार में सभी समस्याएं हमारे जीवन शैली में आए बदलाव के कारण उत्पन्न हुई हैं। इन समस्याओं पर नियंत्रण पाने के लिए श्रीमद्भागवत गीता का ज्ञान अनिवार्य है। यह किसी जाति या धर्म का नहीं पूर्ण मानव जाति का उद्धार ग्रंथ है। मानव जीवन को सार्थक, सरल श्रीमद्भागवत गीता के ज्ञान द्वारा बनाया जा सकता है। महाभारत से लेकर आज तक इस ग्रंथ की महत्ता पूरे विश्व में विख्यात है। मनुष्य कल्याण

के लिए दर्शनशास्त्र में तीन मार्ग प्रस्थानत्रय है। उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भगवतगीता। उपनिषद में मंत्र हैं। ब्रह्म सूत्र में सूत्र हैं। श्रीमद् भगवत गीता में श्लोक हैं। इस ग्रंथ में कर्म फल का त्याग कर करते हुए सात्विक बुद्धि से कार्य करने की प्रेरणा दी है। कर्तव्य का पालन करने से पुरुषार्थ अपने जीवन में निरंतर सफलता उच्चता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

संदर्भ सूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास: डॉ. उमा शंकर शर्मा 'ऋषि' चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान-गोकुल भवन, गोपाल मन्दिर लेन वाराणसी, प्र.सं.-1999।
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास: पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा संस्थान रवीन्द्रपुरी, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी परिवर्धित सं. 1973।
3. वामन शिवराम आपटे, संस्कृत हिन्दी कोश, रचना प्रकाशन, चाँदपोल बाजार, जयपुर, 2005
4. सांख्यकारिका- संपा. आ. जगन्नाथ शास्त्री, मोती लाल बनारसी दास, नई दिल्ली सं. 2003
5. श्रीमद्भगवतगीता- संपा. जयदयाल गोयन्दका, गीता प्रैस, गोरखपुर -273005
6. पाणिनी, अष्टाध्यायी सूत्रपाठ, श्री नारायण मिश्र, गोकुलदास संस्कृतग्रंथमाला, वाराणसी, सं. 1971
7. सम्पूर्ण योग विद्या, मञ्जुल पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002., सं. 2019